ए जो रसूलें कानों सुने, पर लिखे नहीं फुरमान।
सो गुझ मोमिनों को देऊंगी, अर्स अजीम के निसान।। १०१ ।।

उन मारफत के वचनों को रसूल साहब ने कानों से सुना था (मेयराजनामा में लिखा है), किन्तु खुदा के हुकम से कुरान में नहीं लिखे। अब उन छिपी बातों को मैं मोमिनों को बताती हूं और अर्श अजीम के निशानों की पहचान कराती हूं।

क्यों वतन क्यों खसम, कौन ठौर क्यों नूर।
ए सेहेरग से देखे नजीक, जो मोमिन सदा हजूर।। १०२ ।।

घर कितनी दूर है, धनी कितनी दूर हैं, अक्षर कितनी दूर है और उसका कौन ठिकाना है—यह सभी मोमिनों के लिए शहेरग से नजदीक हैं।

दोऊ अर्स बका जाहेर किए, जबरूत नूर जलाल।
हादी रूहें लाहूत में, हक सूरत नूर जमाल।। १०३ ।।

दोनों अर्श जो अखण्ड हैं, अक्षर ब्रह्म का धाम (जबरूत) और लाहूत जहां श्यामा महारानी, रूहें और हक साक्षात् विराजमान हैं, जाहिर कर दिए।

अब कहूं हुकम की, जिनसे सब उतपत।
खेल फरिस्ते हुकमें हुए, हुकमें हुई कयामत।। १०४ ।।

अब मैं उस हुकम का वर्णन करती हूं जिससे सारी सृष्टि बनी, फरिश्ते बने और खेल बना। हुकम से ही उनकी कायमी हुई।

हुकमें झूठे सांच कर, ताए सुख दिए नेहेचल।
अब हुकम कजामें न आवहीं, पर तो भी कहूं नेक बल।। १०५ ।।

हुकम ने ही झूठे संसार के जीवों को अखण्ड करके सच्चे सुख दिए। अब यह हुकम इतना महान् है कि न्याय में नहीं आएगा, परन्तु फिर भी इसकी शक्ति का थोड़ा वर्णन करती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ १४०० ॥

सनन्ध—हुकम की

हुकमें परदा उड़ाइया, कर देऊं सब पेहेचान।
तुमसों गोसे बैठ के, देऊंगी सब निसान।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने अज्ञानता का परदा हटा दिया है। अब मैं उसकी पूरी पहचान तुम्हें कराती हूं। मैं एकान्त में बैठकर तुमको घर के सारे निशान बताती हूं।

हुकमें बात वतन की, जो है गुझ खसम।
गोसे तुमको कहूंगी, जो हुआ मुझे हुकम।। २ ।।

हुकम ने घर की और खसम की गुझ (गुप्त) बातें मुझे बता दी हैं। मुझे हुकम हुआ है कि तुम्हें एकान्त में बैठकर बताऊं।

निसान बका हक अर्स के, सो सब देऊंगी तुम।
पर पेहेले नेक ए कहूं, जो तुम वास्ते हुआ हुकम।। ३ ।।

अखण्ड घर, धनी की पहचान करने की सब हकीकत तुमको बताऊंगी, परन्तु थोड़ा-सा हुकम का बयान करती हूं जो तुम्हारे वास्ते धनी ने किया था।

Nijanand App

कहूं हुकम हक के, जो बैठे कदमों मोमिन।
सो हमेसा अर्स में, ताए मेहेर बड़ी बातन।।४।।

उन मोमिनों को जो श्री राजजी महाराज के चरणों तले हमेशा परमधाम में बैठे हैं, हक के हुकम से कहती हूं कि इन मोमिनों के ऊपर बातूनी मेहर बड़ी है।

खसमें हमारे दिल पर, ऐसे किया हुकम।
तो यों दिल में उपज्या, मांगें खेल खसम।।५।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे लिए दिल पर ऐसा हुकम किया कि हमने श्री राजजी महाराज से खेल मांग लिया। यह इच्छा श्री राजजी महाराज के हुकम से ही हमारे दिल में पैदा हुई।

तब हम मोमिन मिल के, खेल मांग्या हादी हक पे।
तब हुकमें पेहेले पैदा किया, हमारी नजर हुई खेल में।।६।।

तब हम मोमिनों ने मिलकर श्री राजजी महाराज से खेल मांग लिया। फिर हुकम से संसार पैदा हुआ और हमारी सुरताएं (आत्माएं) खेल में आईं।

तब सरूप हुकम के, खेल किया मिने पल।
हाथ फुरमान ले आइया, रसूल हमारा चल।।७।।

तब हुकम के सरूप ने हमारे वास्ते एक पल के अन्दर ब्रह्माण्ड बना दिया तथा खुदा का फुरमान (कुरान) हाथ में लेकर रसूल बनकर हमारे वास्ते आए।

हम भी देखें खेल को, हुकमें मोमिन मिल।
ढूंढ़े अपने खसम को, पेड़ हुकमें फिराई कल।।८।।

हम सब मोमिन मिलकर ही हुकम से खेल देख रहे हैं और अपने खसम को ढूंढ़ रहे हैं, क्योंकि हुकम ने पहले से ही हमारी बुद्धि को घुमा दिया है।

ए खेल सब हुकमें हुआ, सब खेलें हुकम मांहें।
हुकमें सब होसी फना, हुकम बिना कछू नांहें।।९।।

यह सारा संसार हुकम से हुआ है और हुकम से ही जीव इसमें खेल रहे हैं। हुकम से ही ब्रह्माण्ड का प्रलय होगा, अर्थात् हुकम के बिना और कुछ नहीं है।

एक हुकमें बुजरक, दूजे न खाक समान।
बेसुध कर सब हुकमें, खेलावत है जहान।।१०।।

संसार में एक हुकम से सयाने बने बैठे हैं, दूसरे खाक के समान नाचीज बने बैठे हैं। इस तरह से सारे संसार को बेसुध करके यह हुकम खेल खिला रहा है।

हुकमें जड़ चेतन करे, करे चेतन को जड़।
हुकमें सेती हारिए, हुकमें मारे पकड़।।११।।

हुकम से जड़ चेतन हो जाता है और हुकम से ही चेतन जड़ हो जाता है (मर जाता है)। हुकम से हार होती है और हुकम से ही मौत होती है।

एक चलाए पाउसों, एक उड़ाए पर।
पेटें हुकम चलावहीं, एक खड़े रखे जड़ कर।।१२।।

एक पैर से चलते हैं, एक परों से उड़ते हैं, एक पेट से चलते हैं और एक जड़ों के आधार से पेड़ बने खड़े हैं।

Nijanand App

कई दीन फिरके मजहब, खेल फरिस्ते दम।
ए खेल किया हुकमें देखने, सब पर एक हुकम।। १३ ।।

यहां कई धर्म हैं, फिरके हैं। हुकम से ही खेल बनता है, फरिश्ते बनते हैं और आदमी बनते हैं। यह सब हुकम का खेल देखने के वास्ते बना है। सबके ऊपर खुदा का एक ही हुकम चलता है।

भेख भाखा जातें जुदियां, न तो सोई दम सोई देह।
खैंचा-खैंच कर हुकमें, खेल बनाया एह।। १४ ।।

हुकम से ही भेष, भाषा, जातियां अलग-अलग हैं, नहीं तो सब एक ही होना चाहिए। खैंचा-खैंच (विरोध) भी हुकम से करते हैं, क्योंकि यही खेल है जो हुकम ने बनाया है।

एकों को हुकम हुआ, तिन लई राह मुस्लिम।
पीछे जुदी जुदी जिनसों, ए सब खेलें खेल हुकम।। १५ ।।

हुकम से कुछ लोगों ने सच्चा रास्ता यकीन से लिया। पीछे अलग-अलग फिरके बना दिए। इस तरह से सारा खेल हुकम से है।

हुकमें करहीं बंदगी, हुकमें इस्क ले।
हुकमें चोरी कर ल्यावहीं, हुकमें जाए सिर दे।। १६ ।।

हुकम से ही बन्दगी करते हैं और हुकम से ही इश्क मिलता है। हुकम से ही चोर चोरी कर लाता है और हुकम से लोग कुर्बानी देते हैं।

चले रहे सब हुकमें, बैठे सोवे हुकम।
बिना हुकम रूह सबके, मुख न निकसे दम।। १७ ।।

चलना, रहना हुकम से होता है। हुकम से ही सोना और बैठना होता है। बिना हुकम के किसी के मुख से एक शब्द भी नहीं निकलता।

करम काल सब हुकमें, बांधे खोले हुकम।
भिस्त दोजख हुकमें, हुकमें देवे कदम।। १८ ।।

कर्म भी हुकम से होता है। काल भी हुकम से आता है। माया के बन्धन और छुटकारा भी हुकम से होते हैं। बहिश्त, दोजख सब हुकम से होता है। हुकम से ही सहारा मिलकर कदम आगे बढ़ते हैं।

दाना दिवाना हुकमें, हुकमें दोस निरदोस।
दूर नजीक करे हुकमें, हुकमें अपना जोस।। १९ ।।

दाना, दीवाना, दोष, निर्दोष, दूर, नजदीक, यह सब हुकम अपने जोश से करता है।

हुकमें जोग जो लेवहीं, हुकमें देवे भोग।
हुकमें रोग जो आवहीं, हुकमें देवे सोग।। २० ।।

योग, भोग, रोग और दुःख सब हुकम से होते हैं।

लेवे देवे सब हुकमें, नेकी बदी हुकम।
मरे मारे सब हुकमें, या चीजें या दम।। २१ ।।

लेना, देना, नेकी, बदी, मरना, मारना, वस्तुओं का मिलना या जीवन यह सब हुकम से होते हैं।

Nijanand App

दुस्मन हुकमें सज्जन, सज्जन हुकमें वैर।
खूंनी मेहेर सीधा उलटा, हुकमें मीठा जेहेर।। २२ ।।

हुकम से दुश्मन सज्जन और सज्जन दुश्मन बन जाते हैं। हुकम से खूनी सीधा हो जाता है और हुकम से जहर मीठा हो जाता है।

जिमी हद न छोड़हीं, ना हद छोड़े जल।
रुत रंग सब हुकमें, होवे चल विचल।। २३ ।।

यह जमीन और सागर अपनी हद नहीं छोड़ते। ऋतु के रंग आते-जाते हैं। यह सब हुकम से होता है।

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए।
पल में हुकम यों करे, पल में देवे उड़ाए।। २४ ।।

हवा, बादल, बिजली का गरजना, घोर बारिश से पृथ्वी पर जल न समाना यह सब हुकम एक पल में पैदा कर उड़ा देता है।

जल को थल उलटावहीं, थल को उलटावे जल।
कायर सूरे खाली भरे, सब में हुकम बल।। २५ ।।

जल को थल में और थल को जल में बदल देता है। कायर बहादुर बन जाते हैं। यह सब हुकम की ताकत से होता है।

पात ना रेहेवे बन में, हुकमें फल फूल बास।
हुकमें उजाला अंधेर, हुकमें अंधेर उजास।। २६ ।।

वन में पतझड़ तथा फल-फूलों में सुगन्ध आना, उजाला और अंधेरा—यह सब हुकम से होता है।

ताता सीरा फिरे हुकमें, ससि सूर नखत्र।
इन जुबां बल हुकम के, केते कहूं विचित्र।। २७ ।।

यह सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्र सब हुकम से घूमते हैं। हुकम की ताकत का इस जबान से वर्णन नहीं होता। कहां तक वर्णन करूं? सारी विचित्र परिस्थितियां हुकम से बनती हैं।

सब पर हुकम हक का, कहे पुकार रसूल।
जल थल चौदे तबकों, कोई जरा ना हुकमें भूल।। २८ ।।

रसूल साहब पुकार कर कुरान में कह रहे हैं कि सभी पर हक का हुकम चलता है। जल-थल में, चौदह तबकों में भूल से भी कोई जरा सी भी चीज हुकम से बाहर नहीं है।

कई कोट इंड ऐसे पल में, करके पैदा उड़ाए।
बल जरा इन हुकम का, इन जुबां कह्यो न जाए।। २९ ।।

करोड़ों ब्रह्माण्ड एक पल में हुकम बनाकर मिटा देता है, इसलिए इस जबान से हुकम की ताकत का वर्णन नहीं होता है।

सरूप रसूल हुकम, आगे खड़ा खसम।
हुकमें देखाया रूहन को, बैठे देखें तले कदम।। ३० ।।

हुकम का ही स्वरूप धारण कर श्री राजजी के सामने रसूल साहब खड़े हैं और हुकम ही श्री राजजी के चरणों तले बिठाकर रूहों को खेल दिखला रहा है।

Nijanand App

इन हुकम की इसारतें, कई फरिस्ते उपजत।
कई समावें सुन्य में, कई डारें ले गफलत।। ३१ ।।

हुकम के इशारे मात्र से सब देवी-देवता पैदा हो जाते हैं। कई निराकार में समा जाते हैं। कई संशय में ही पड़े रह जाते हैं।

जिन कहो अजाजील को, इनने फेरया हुकम।
इन हुकम की इसारतें, हादी वास्ते करी खसम।। ३२ ।।

ऐसा न कहो कि अजाजील फरिश्ते ने हुकम को नहीं माना। हुकम के इशारे मात्र से उसने ऐसा किया ताकि रूहें खेल देख सकें।

अजाजील भूल्या नहीं, पर हुकमें भुलाया ताए।
ओ तो सिर ले हुकम, खड़ा है एक पाए।। ३३ ।।

अजाजील भूला नहीं था, पर हुकम ने उसको भुलाया वरना वह हुकम को सिर पर लिए एक पैर पर खड़ा है, अर्थात् खुदा का हुकम वह टाल ही नहीं सकता था।

तो पीछा फेरे हुकम, जो कोई दूसरा होए।
हुकम सबों समझावहीं, हुकमें न समझे कोए।। ३४ ।।

अजाजील फरिस्ता तो हुकम का बंधा खड़ा है, हुकम अदूली तो कोई गैर ही कर सकता है अजाजील नहीं, पर राजजी के हुकम से ही सबको सुध आती है और हुकम से ही सब भूलते हैं।

नूरी फरिस्ता हुकमें, ले डारया उलटाए।
ए मोमिनों खातिर हुकम, कई विध खेल बनाए।। ३५ ।।

हुकम ने इस नूरी फरिश्ते अजाजील को उलटा दिया। मोमिनों के वास्ते ही हुकम ने कई तरह के खेल बनाए।

पांउ न उठे हुकम बिना, मुख न निकसे दम।
दिल चितवन भी न करे, फरिस्ता बिना हुकम।। ३६ ।।

हुकम के बिना पैर नहीं उठता। हुकम के बिना मुंह से आवाज नहीं निकलती। दिल में चितवन भी हुकम के बिना नहीं होता। फरिस्ते भी हुकम के आधीन हैं।

तले खड़ा हुकम के, नाम जो नूरी जिन।
माएने जाहेर न किए, हुकमें एते दिन।। ३७ ।।

अजाजील हुकम से ही खड़ा है। यह नूरी फरिश्ता कहलाता है। उसने हुकम के कारण ही इतने दिनों तक ज्ञान नहीं फैलने दिया।

बुरका डाल अजाजील पर, हुकमें किया रद।
सिजदा कराया आदम पर, जित मेंहेदी मोमिन महंमद।। ३८ ।।

अजाजील के ऊपर हुकम ने परदा डाला। उसने आदम पर सिजदा करने की हुकम अदूली की। उस आदम पर जिसके तन में मुहम्मद मेंहदी और मोमिन विराजमान हैं, हुकम ने ही अजाजील से सिजदा करवाया।

Nijanand App

बेसुध हुकमें करके, खेल कराया छल।
ताए जो सिजदा करावहीं, पर हुकम बस अकल।। ३९ ।।

अजाजील को हुकम से ही बेसुध करके माया का खेल बनवाया। संसार के जीवों की बुद्धि भी हुकम के हाथ है जो इन्हें बेसुध करके अजाजील (विष्णु) पर सिजदे करा रही है।

फरिस्ता कतरे नूर से, लानत दीनी ताए।
सो मोमिन जाहेर करके, हुकमें सिजदा कराए।। ४० ।।

अजाजील फरिश्ता अक्षर के नूर के कतरे (बूंद) का रूप है। फिर भी उसे लानत लगी। बाद में उसे मोमिनों की पहचान कराकर हुकम ने ही अजाजील को मोमिनों पर सिजदा कराया।

जिन आदम में महंमद, हुकमें आए मोमिन।
अजाजील अब हुकमें, पकड़ कदम हुआ रोसन।। ४१ ।।

जिस आदमी की शक्ल में मुहम्मद आए उस जैसी शक्ल में मोमिन आए, इसलिए अब हुकम से ही अजाजील उन मोमिनों के कदम पकड़कर सुरूखरु (गुनाह रहित) हो गया।

हुकमें आवे लदुन्नी, हुकमें आवे किताब।
सोई खोले हक हुकमें, जिन सिर दिया खिताब।। ४२ ।।

हुकम से ही कुरान आया है। हुकम से ही कलमा आया है। हुकम से ही इसको खोलने वाले श्री प्राणनाथजी आए हैं, जिनके सिर पर आखिरी इमाम मेंहदी का खिताब (उपाधि) है।

नफा नुकसान सब हुकमें, हुकमें भिस्त दोजख।
झूठा सांच करे हुकमें, हुकम करे सबों हक।। ४३ ।।

नफा, नुकसान, बहिश्त, दोजख, झूठ में सच्चा करना, हुकम से ही होता है।

हुकमें मोमिनों वास्ते, कई चीजें करी पैदाए।
अर्स अरवाहें पेहेचान, कई विध हुकम कराए।। ४४ ।।

हुकम ने मोमिनों के वास्ते कई चीजें बनाई हैं, जिनसे अर्श अरवाहों (ब्रह्मसृष्टियों) की पहचान होती है।

हुकमें मुसाफ इसारतें, करें मोमिनों पेहेचान।
खोले बातून मोमिन हुकमें, याद आवे अर्स निसान।। ४५ ।।

हुकम से ही कुरान में गुझ (गुह्य) बातें लिखी हैं। हुकम से ही मोमिन उन्हें पहचानेंगे और हुकम से ही मोमिन उसके बातूनी भेद खोलेंगे। हुकम से ही परमधाम के निशान याद आएंगे।

ए खेल किया हुकमें, हुकमें आए रसूल।
हुकमें मोमिन आए के, गए खेल में भूल।। ४६ ।।

यह खेल हुकम ने बनाया। हुकम से ही रसूल साहब आए हैं। हुकम से ही मोमिन खेल में आकर भूल गए हैं।

आप हुकम आया इत, चलाया हुकम।
हुकमें छलतें छोड़ाए के, जाहेर किए खोल इलम।। ४७ ।।

आप हुकम के स्वरूप श्री प्राणनाथजी यहां आए और अपना हुकम चलाया जिससे कुरान (इलम) के भेद खोलकर मोमिनों को छल से छुड़ाया।

Nijanand App

रूहों को खेल देखाइया, विध विध हुकम कर।
आप बांध्या हुकम का, होए रसूल आया आखिर।।४८।।

पारब्रह्म ने तरह-तरह से हुकम देकर रूहों को खेल दिखाया। आप भी हुकम के बन्धन में बंधकर रसूल होकर आए।

बांधे आप हुकम के, काजी हुए इत आए।
कौल किया मोमिनोंसों, सो पाल्या खेल देखाए।।४९।।

आप ही हुकम के बन्धन में बंधकर श्री प्राणनाथजी काजी बनकर आए और परमधाम में जो मोमिनों से वायदे किए थे उसी वायदे को निभाने के लिए खेल दिखाया।

हुकमें सब जुदे जुदे, खेल किए विवेक।
मोमिनों को देखाए के, आखिर किया दीन एक।।५०।।

हुकम से ही तरह-तरह के खेल किए और हुकम से ही मोमिनों को सब धर्मों की पहचान कराकर आखिर में एक पारब्रह्म के पूजक निजानन्द धर्म बनाया।

अबलों बेसुध हुकमें, खेली सकल जहान।
तिनों सुध हुई हुकमें, यों खुली इसारते फुरमान।।५१।।

आज दिन तक सारी दुनियां हुकम से ही बेखबर होकर चलती रही और अब हुकम से कुरान की इशारतें खुलीं और सबको ज्ञान मिला।

अजाजील दम सबन में, लगी लानत दम तिन।
लोक जाने लगी अजाजील को, वह तो हुकमें कही सबन।।५२।।

अजाजील (भगवान विष्णु) सबके अन्दर हैं, इसलिए सारे संसार को लानत लगी है। लोग समझते हैं कि खुदा ने लानत अजाजील को दी थी। वह तो हुकम से सबको लानत लगी बताया है।

पीछे हुकमें जाहेर करी, अबलीस सब दिलों पातसाह।
हुआ सबों का दुस्मन, ना करने देत सिजदाए।।५३।।

हुकम ने बाद में यह जाहिर किया कि सबके दिलों पर बादशाही अबलीस (शैतान-नारद) की है जो सबका दुश्मन है और श्री प्राणनाथजी के ऊपर सिजदा नहीं करने देता।

एही फौज दुनी अजाजील की, याही अकलें लगी लानत।
पेहेचान हुई सब हुकमें, पीछे छूटी बखत कयामत।।५४।।

यह सारे संसार के लोग अजाजील (भगवान विष्णु) की ही फौज हैं, इसीलिए लोगों की बुद्धि पर लानत लगी है। यह पहचान भी हुकम से हुई। यह लानत कायमी के वक्त ही हटेगी।

असल आदम रसूल, कह्या सिजदा इन पर।
चीन्ह्या न नबी को लानती, तो दुनी रही सिजदे बिगर।।५५।।

असल आदम तो रसूल साहब हैं जिनके उपर सिजदा करने का हुकम हुआ था। लानती अजाजील ने नबी को नहीं पहचाना और इसलिए दुनियां भी सिजदा करने से रह गई।

हुकमें चिन्हाया रसूल, तब आया सबों आकीन।
किया सबों ने सिजदा, जब हुकमें हुआ एक दीन।।५६।।

अब हुकम से ही नूरी रसूल श्री प्राणनाथजी की पहचान हुई और सबों को यकीन आया। सभी ने श्री प्राणनाथजी के चरणों में सिजदा बजाया। तब हुकम से एक दीन (निजानन्द धर्म) होगा।

Nijanand App

लानत उतरी अजाजील से, सब कायम हुए तले नूर।
हुई हैयाती सबों हुकमें, उग्या रोसन अर्स बका सूर।।५७।।

तब आखिरत के समय में अजाजील के सिर से लानत उतर जाएगी और सब अक्षर की नजर के तले अखण्ड हो जाएंगे। अखण्ड परमधाम की तारतमवाणी का सूर्य उदय होने पर हुकम से ही सबको बहिश्तें मिलीं।

हुकमें हम आए इत, ले हुकमें हक इलम।
मैं खासा मोहोल खसम का, कर हुकम केहेलाया तुम।।५८।।

हुकम से हम यहां हक का इलम (तारतम वाणी) लेकर आए। अब महामति जी कहती हैं कि श्री राजजी महाराज मेरे अन्दर विराजमान हैं (मैं ही हकी सूरत हूं)। अपने हुकम से ही मुझसे तुमको कहलवा रहे हैं।

जाहेर किया हुकमें, हुकमें किया हक।
हुकमें लीन्ही अन्दर, जुबां रही इत थक।।५९।।

मैं हकी सूरत हूं यह हुकम ने जाहिर किया। हुकम से ही मैं पूर्णब्रह्म बनी। अब श्री राजजी महाराज ने मुझे अपनै अन्दर ले लिया (मैं एक हो गई) तो मेरी जबान आगे कुछ नहीं कह सकती।

हुकम न आवे सब्द में, तो भी कह्या नेक सोए।
अब केहेनी जुबां बदले, सो मेंहेदी बिना न होए।।६०।।

श्री राजजी महाराज के हुकम की महिमा शब्दों में नहीं आती। फिर भी थोड़ी-सी बताई है। अब आगे इसी बात को जबान बदलकर बताना है। मगर यह काम इमाम मेंहदी के बिना और कोई कर नहीं सकता।

अब लेने अर्स अजीम में, बोलसी जुबां इमाम।
सो तो अपने आप को, केहेने हैं कलाम।।६१।।

अब मोमिनों को अर्श अजीम में लेने के लिए इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी कहेंगे और वह स्वयं ही अपने मुख से अपनी पहचान कराएंगे।

अब बातें अंदर की, पूछसी सब मोमिन।
जाहेर देऊं निसानियां, ज्यों देखो अर्स वतन।।६२।।

अब मेरे परमधाम के अन्दर की सब बातें मोमिन मिलकर पूछेंगे और मैं भी उन्हें जाहिर रूप में ऐसा ज्ञान दूंगी जिससे उन्हें अपने घर की पहचान हो जाए।

समझो एक इसारतें, ऐसा कर दें हम।
तब फेर इत का पूछना, रहे उमेदां तुम।।६३।।

मैं महामति, अब तारतम वाणी के इशारे से सब कुछ बता दूंगी। फिर तुम्हें पूछने की कोई उम्मीद (चाहना) बाकी नहीं रह जाएगी।

जब समझे तब देखिया, याद जो आवे दिल।
बीच खिलवत बातें हकपे, जो मांग्या तुम मिल।।६४।।

जब समझ जाओगे तब देख लेना सब बातें (घर की) तुम्हारे दिल में याद आ जाएंगी। जो श्री राजजी महाराज से मिलकर खिलवत में बैठकर सबने मांगा था।

Nijanand App

याद आए आंखां खुलें, तब तुमें रहे उमेद।
ज्यों मकसूद सब होवहीं, अब कहूं तिन भेद।। ६५ ।।

यह सब बातें याद आने पर हम सावचेत हो जाएंगे। तब घर चलने की चाहना होगी। वह सब मिलेगा कैसे? उसकी भी हकीकत बताती हूं।

ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम।
न तो लेते अंदर, केती बेर है हम।। ६६ ।।

यह रात थोड़ी लम्बी कर दी है, क्योंकि तुम्हारी खेल देखने की इच्छा पूरी नहीं हुई। नहीं तो खेल खत्म करके तुमको परमधाम ले चलने में कितनी देर लगती है।

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। १४६६ ।।

सनन्ध–नूर नूर-तजल्ला की

कह्या जाहेर रसूलें, मैं हरफ सुने हैं कान।
सो आए केहेसी इमाम, मैं लिखे नहीं फुरमान।। १ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैंने खुदा से मारफत के वचन सुने हैं, लेकिन कुरान में नहीं लिखे हैं। इमाम मेंहदी आकर उनको जाहिर करेंगे।

जो हरफ जुबां चढ़े नहीं, सो क्यों चढ़े कुरान।
और जुबां ले आवसी, इमाम एही पेहेचान।। २ ।।

जो बातें मारफत की मुझे याद ही नहीं रहीं वह कुरान में कैसे कहता। उन्हीं बातों को दूसरी भाषा हिन्दुस्तानी में इमाम मेंहदी बोलेंगे। यही उनकी पहचान होगी।

बोलें न मेंहेदी एक जुबां, जुबां बोलें कई लाख।
आगे बिन जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख।। ३ ।।

इमाम मेंहदी एक भाषा नहीं बोलेंगे। वह कई भाषाओं में बोलेंगे। मोमिनों के तनों में बैठकर लाखों भाषाओं में बोलेंगे। यह तन मोमिनों के होंगे, इसलिए लिखा है कि वह बिना अंग के बोलेंगे।

खेल में मेंहेदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर।
आगे तो नूर-तजल्ला, तहां जुबां बोल है और।। ४ ।।

खेल में मेंहदी की भाषा सरल और सुगम होगी। साहित्यिक और कानूनी भाषा जिसके अर्थ न हों, नहीं होगी। आगे तो नूरतजल्ला है, परमधाम है जहां बोली और भाषा अलग है।

खातिर मोमिन रसूलें, कई निसान लिखे प्यार कर।
सो मैं ठौर ठौर हक बका, कर देऊं सब खबर।। ५ ।।

मोमिनों के वास्ते रसूल साहब ने प्यार करके कई तरह के निशान लिखे हैं जिससे हमारी और अखण्ड घर की पहचान होती है। उनके मैं ठिकाने बताती हूं।

इमामें मोहे सब दियो, राख्यो न कछुए बीच।
गुन अंग सोभा देय के, आप हुए नेहेचित।। ६ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मुझे इमाम साहब ने सब कुछ दे दिया है। कुछ भी बाकी नहीं रखा। गुण, अंग और शोभा देकर आप बेफिक्र हो गए हैं।

Nijanand App